RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
दिसंबर
30
2024

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

By Ankit Avasthi Sir

डीप ओशन मिशन / Deep Ocean Mission

भारत सरकार ने समुद्र की गहराई में मानव को भेजने की योजना बनाई है। यह मिशन 2026 की शुरुआत में मानव अंतरिक्ष मिशन के साथ पूरा हो सकता है। इस मिशन के तहत भारत का लक्ष्य तीन लोगों को समुद्रतल से 6,000 मीटर नीचे भेजकर वहां के रहस्यों को जानना है।

डीप ओशन मिशन के बारे में:

- **ब्लू इकोनॉमी को समर्थन:** यह मिशन भारत सरकार की ब्लू इकोनॉमी पहल का समर्थन करने के लिए शुरू किया गया है।
- **बहु-मंत्रालयीय और बहु-विषयक कार्यक्रम:** यह मिशन भारतीय महासागर के गहरे समुद्र के जीवित और अजीवित संसाधनों को समझने के लिए उच्च-स्तरीय बहु-मंत्रालयीय और बहु-विषयक कार्यक्रम है।
- **ब्लू इकोनॉमी का दर्जा हासिल करने में मदद:** यह मिशन भारत के ब्लू इकोनॉमी का दर्जा प्राप्त करने के प्रयासों में सहायक होगा।
- **नई तकनीकों का विकास:** इस मिशन का उद्देश्य गहरे समुद्र से जीवित और अजीवित संसाधनों को प्राप्त करने के लिए तकनीकों का विकास करना है।
- **नोडल मंत्रालय:** इस मिशन को पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (MoES) द्वारा क्रियान्वित किया जाएगा।
- **मिशन की लागत और समय:** इस मिशन की अनुमानित लागत 5 वर्षों (2021-26) के लिए 4077 करोड़ रुपये है, जिसे चरणबद्ध तरीके से लागू किया जाएगा।
- **मिशन के मुख्य घटक:**
    1. गहरे समुद्र की खनन और मानवयुक्त पनडुब्बी तथा पानी के अंदर रोबोटिक्स के लिए तकनीक का विकास।
    2. महासागर जलवायु परिवर्तन परामर्श सेवाओं का विकास।
    3. गहरे समुद्र की जैव विविधता के अन्वेषण और संरक्षण के लिए तकनीकी नवाचार।
    4. गहरे समुद्र का सर्वेक्षण और अन्वेषण।
    5. महासागर से ऊर्जा और ताजा पानी प्राप्त करना।
    6. समुद्री जीव विज्ञान के लिए उन्नत समुद्री स्टेशन।

महत्वपूर्ण पहलू:

- 'न्यू इंडिया 2030' दस्तावेज़ में ब्लू इकोनॉमी को भारत की प्रगति के छठे मुख्य उद्देश्य के रूप में दर्शाया गया है।
- 2021-2030 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा 'महासागर विज्ञान का दशक' घोषित किया गया है।
- डीप ओशन मिशन (DOM) प्रधानमंत्री के विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार सलाहकार परिषद (PMSTIAC) के तहत नौ मिशनों में से एक है।
- यह मिशन मूल्यवान संसाधनों, जैसे पॉलीमेटालिक नोड्यूल्स और पॉलीमेटालिक सल्फाइड्स, के सतत उपयोग के लिए महत्वपूर्ण है।

चुनौतियां:

1. **गहरे महासागर में उच्च दबाव:**
    - ऐसी परिस्थितियों में काम करने के लिए मजबूत धातुओं या टिकाऊ सामग्री से बने विशेष उपकरणों की आवश्यकता होती है।
2. **समुद्र तल पर लैंडिंग:**
    - महासागर की सतह बेहद नरम और कीचड़युक्त होने के कारण लैंडिंग एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।
3. **ऊर्जा की आवश्यकता:**
    - खनिजों को सतह पर लाने के लिए बहुत अधिक ऊर्जा और शक्ति की आवश्यकता होती है।
4. **कम दृश्यता:** गहराई में प्राकृतिक प्रकाश केवल कुछ मीटर तक ही पहुंच पाता है, जिससे कार्य कठिन हो जाता है।

पर्यावरणीय चिंताएं:

1. **पारिस्थितिकी तंत्र को खतरा:** गहरे समुद्र का केवल एक छोटा हिस्सा ही खोजा गया है। पर्यावरणविदों को चिंता है कि खनन के कारण पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान हो सकता है, विशेषकर जब कोई पर्यावरणीय प्रोटोकॉल नहीं अपनाया गया हो।
2. **संबंधित नुकसान:** खनन प्रक्रिया में शोर, कंपन, प्रकाश प्रदूषण, और ईंधन व रसायनों के रिसाव जैसे नुकसान हो सकते हैं।
3. **समुद्री जीवन को नुकसान:** कीमती सामग्री निकालने के बाद, गाद और अवसाद को समुद्र में वापस डाल दिया जाता है। यह कोरल और स्पंज जैसे फिल्टर-फीडिंग जीवों को गंभीर नुकसान पहुंचा सकता है।

लाइटहाउस पर्यटन / Lighthouse Tours

भारत, जिसकी तटरेखा 7500 किलोमीटर लंबी है और जिसमें 204 लाइटहाउस शामिल हैं, अब इन ऐतिहासिक इमारतों को विकास नीति के तहत पर्यटन स्थलों में बदल रहा है।

- यह प्रयास इन लाइटहाउस की ऐतिहासिक और वास्तुशिल्पीय महत्व का मूल्यांकन करने के साथ-साथ आर्थिक विकास और सामुदायिक सुधारों में उनके योगदान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया जा रहा है।

लाइटहाउस पर्यटन: लाइटहाउस संरचनाओं को समुद्री इतिहास, सुंदरता और मनोरंजन के केंद्र के रूप में पर्यटक आकर्षण में बदलने का प्रयास है।

भारत में पर्यटन उद्योग के एकीकृत विकास की मास्टर प्लान (MIV 2030) और अमृत काल विजन 2047 के समर्थन के तहत, लाइटहाउस पर्यटन सभ्यता के समृद्धिकरण और सतत पर्यटन का एक साधन बनेगा।

लाइटहाउस पर्यटन: एक नई पहल:

1. **पर्यावरण और दृश्य परिदृश्य का संगम:**
   - लाइटहाउस पर्यटन में समुद्र तटीय दृश्य, समुद्र तट, नौसैनिक और तटीय इतिहास, और मनोरंजन व खेल गतिविधियाँ शामिल हैं।
2. **महत्वपूर्ण योजनाओं का हिस्सा:**
   - यह "मैरीटाइम इंडिया विजन 2030" और "अमृत काल विजन 2047" का एक प्रमुख प्रोजेक्ट है, जिसका उद्देश्य पर्यटन और सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देना है।
3. **मुख्य उद्देश्य:**
   - पर्यटन संवर्धन: लाइटहाउस स्थलों के प्राकृतिक और सांस्कृतिक महत्व को उजागर करना।
   - रोज़गार के अवसर: स्थानीय समुदाय के लिए आजीविका के साधन बढ़ाना।
   - संस्कृति और रोमांच: सांस्कृतिक आकर्षण और रोमांचक गतिविधियों के जरिए पर्यटकों को आकर्षित करना।
4. **आर्थिक योगदान:**
   - पर्यटन के माध्यम से आर्थिक विकास में योगदान।
   - क्षेत्रीय पर्यटन को प्रोत्साहन देना।

भारत में लाइटहाउस पर्यटन की संभावनाएँ:

1. **रणनीतिक स्थानों की खासियत:** भारत के तटीय क्षेत्रों और दूरस्थ द्वीपों पर स्थित लाइटहाउस सुंदर समुद्री दृश्यों का आनंद प्रदान करते हैं।
2. **सांस्कृतिक महत्व:** कई लाइटहाउस सदियों पुराने हैं और महाबलीपुरम (तमिलनाडु) जैसे यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों या अन्य सांस्कृतिक धरोहरों के निकट स्थित हैं।
3. **रोमांच और मनोरंजन का केंद्र:** ये स्थल ट्रेकिंग, बोटिंग, और वॉटर स्पोर्ट्स जैसी रोमांचक गतिविधियों का आयोजन कर रोमांच प्रेमियों को आकर्षित कर सकते हैं।
4. **आर्थिक प्रभाव:**
   - लाइटहाउस पर्यटन के विकास से आतिथ्य, परिवहन और हस्तशिल्प क्षेत्रों में रोजगार सृजन होगा।
   - स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने में योगदान देगा।

लाइटहाउस पर्यटन के लिए सरकारी पहल:

1. **75 लाइटहाउसों का विकास:**
   - ₹60 करोड़ का निवेश।
   - आधुनिक संरचनाएँ जैसे संग्रहालय, एम्फीथिएटर, पार्क और बगीचों का निर्माण।
   - पर्यटकों की संख्या में वृद्धि: 2014 में 4,00,000 से 2023-24 में 16,00,000 तक।
2. **इंडियन लाइटहाउस फेस्टिवल:**
   - हर दो साल में आयोजित होने वाला सम्मेलन।
   - फरवरी 2023 में गोवा के फोर्ट अगुआड़ा पर्यटन स्थल पर पहली बार आयोजित।
3. **हितधारकों की भागीदारी:**
   - केरल और ओडिशा जैसे राज्यों में बैठकें आयोजित कर आगे की योजनाओं का निर्माण।
4. **निजी साझेदारी:**
   - सागरमाला कार्यक्रम के तहत, निजी क्षेत्र के साथ मिलकर अंतरराष्ट्रीय मानकों और स्थिरता को सुनिश्चित करना।

आरबीआई ने एआई के नैतिक उपयोग पर समिति की घोषणा की / RBI announces committee on ethical use of AI

भारतीय रिजर्व बैंक ने वित्तीय क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के जिम्मेदार और नैतिक उपयोग के लिए एक समिति का गठन किया है, जिसे "फ्री-AI" फ्रेमवर्क कहा गया है। इस 8 सदस्यीय समिति की अध्यक्षता डॉ. पुष्पक भट्टाचार्य द्वारा की जा रही है।

- समिति का उद्देश्य वित्तीय सेवाओं में AI के वर्तमान उपयोग का मूल्यांकन करना, इसके साथ जुड़े संभावित जोखिमों की पहचान करना और एक व्यापक फ्रेमवर्क का प्रस्ताव करना है।

समिति के बारे में:

1. यह समिति, वित्तीय सेवाओं में AI के वर्तमान उपयोग का मूल्यांकन करेगी, जो न केवल भारत में, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी होगा।
2. यह समिति वित्तीय क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के नियामक और पर्यवेक्षी दृष्टिकोण की समीक्षा करेगी, विशेष रूप से वैश्विक स्तर पर।
3. समिति AI से जुड़ी संभावित जोखिमों की पहचान करेगी, और इसके लिए एक मूल्यांकन, जोखिम घटाने और निगरानी ढांचे की सिफारिश करेगी। यह वित्तीय संस्थानों जैसे बैंक, NBFCs, FinTechs, PSOs आदि के लिए अनुपालन आवश्यकताएं भी सुझाएगी।
4. यह समिति भारतीय वित्तीय क्षेत्र में AI मॉडल/एप्लिकेशन के जिम्मेदार और नैतिक उपयोग के लिए शासन से जुड़े पहलुओं पर भी एक ढांचा सिफारिश करेगी।
5. समिति अपनी रिपोर्ट पहली बैठक के छह महीने के भीतर प्रस्तुत करेगी।

वित्तीय सेवाओं में एआई के लाभ:

1. **संचालनात्मक दक्षता:**
   - एआई समय-संवेदनशील और दोहराए जाने वाले कार्यों को स्वचालित कर सकता है, जिससे वित्तीय संस्थान बड़ी मात्रा में डेटा को तेजी से और सटीक रूप से प्रोसेस कर सकते हैं।
   - उदाहरण: ऋण आवेदन प्रक्रिया।
2. **बेहतर निर्णय लेना:**
   - एआई भविष्यवाणी विश्लेषणों के माध्यम से वित्तीय निर्णयों को अधिक सटीक बनाता है, जो बाजार के रुझानों की भविष्यवाणी करते हैं।
   - उदाहरण: एल्गोरिथम आधारित ट्रेडिंग।
3. **ग्राहक संबंध:**
   - वित्तीय संस्थान 24/7 एआई-संचालित चैटबॉट और वर्चुअल असिस्टेंट का उपयोग करके ग्राहकों के साथ बेहतर बातचीत कर सकते हैं।
4. **सुधारित जोखिम प्रबंधन:**
   - पारंपरिक रूप से धोखाधड़ी की पहचान के विपरीत, एआई पहले से धोखाधड़ी को रोकने में मदद करता है।

भारतीय वित्तीय क्षेत्र में एआई का उपयोग

1. **आरबीआई की रिपोर्ट में एआई की भूमिका:**
   - अक्टूबर महीने की रिपोर्ट में, भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने एआई की क्रांतिकारी क्षमता को मान्यता दी है।
   - एआई को प्रक्रियाओं को सरल बनाने, त्रुटियों को कम करने और ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाने के एक उपकरण के रूप में देखा गया है।
   - एआई-संचालित समाधान जोखिम मूल्यांकन, धोखाधड़ी पहचान और बेहतर ग्राहक सेवा में सुधार कर सकते हैं।
   - इन नवाचारों से बैंकिंग सेवाओं को एक व्यापक जनसंख्या के लिए सुलभ बनाया जा सकता है।
2. **चुनौतियां और चिंताएं:**
   - आरबीआई ने एआई एल्गोरिदम में पक्षपाती होने का खतरा उठाया है, जिससे भेदभावपूर्ण परिणाम हो सकते हैं।
   - डेटा गोपनीयता और सुरक्षा के मुद्दों को हल किया जाना चाहिए ताकि एआई का जिम्मेदार उपयोग सुनिश्चित किया जा सके।
3. **निजी बनाम सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक:**
   - निजी क्षेत्र के बैंक एआई समाधानों को अपनाने में अधिक सक्रिय रहे हैं और डिजिटल नवाचार पर जोर दे रहे हैं।
   - वे एआई का उपयोग ग्राहक वर्गीकरण, रोबो-सलाहकार और व्यक्तिगत वित्तीय सलाह देने के लिए कर रहे हैं।
   - सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक भी अब एआई की क्षमता को पहचान रहे हैं।
   - जैसे-जैसे एआई विकसित हो रहा है, बैंकों को नवाचार और जिम्मेदार उपयोग के बीच संतुलन बनाए रखना होगा।

ग्रीन ऑपरेशन / Green Operation

ऑपरेशन ग्रीन्स योजना, जिसे भारत सरकार ने 2018 में शुरू किया था, का उद्देश्य फसल मूल्य को स्थिर करना और किसानों की आय बढ़ाना है। 2024 तक, एक संसदीय रिपोर्ट के अनुसार, 2024-25 के लिए निर्धारित बजट का केवल 34 प्रतिशत ही उपयोग किया गया है। यह रिपोर्ट किसानों द्वारा सामना की जा रही समस्याओं को उजागर करती है।

ग्रीन ऑपरेशन की खराब कार्यान्वयन स्थिति:

- **वित्तीय वर्ष 2024-25** के लिए सरकार ने इस योजना के लिए ₹173.40 करोड़ आवंटित किए थे।
- 11 अक्टूबर 2024 तक, केवल ₹59.44 करोड़ (34.27%) बजट का ही उपयोग हुआ है।
- 65.73% फंड्स का उपयोग नहीं हुआ है, जिससे खर्च की सीमा पूरी करने पर सवाल उठ रहे हैं।
- इस योजना में 10 संचालन परियोजनाओं को 2024-25 में पूरा करने का लक्ष्य था, लेकिन 14 अक्टूबर 2024 तक केवल 3 परियोजनाएं ही पूरी हो पाई हैं।
- इन देरी और कम बजटीय उपयोग ने योजना की प्रभावशीलता पर प्रश्नचिन्ह खड़े कर दिए हैं, साथ ही यह भी चिंता जताई जा रही है कि सरकार देशभर के किसानों को जो समस्याएं आ रही हैं, उन्हें समाधान प्रदान करने में सक्षम है या नहीं।

ऑपरेशन ग्रीन्स:

- ऑपरेशन ग्रीन्स किसानों का समर्थन करने के लिए शुरू किया गया था, जिसका उद्देश्य भंडारण के लिए अवसंरचना का निर्माण करना और पोस्ट-हार्वेस्ट नुकसान को कम करना था।
- शुरुआत में यह योजना टमाटर, प्याज और आलू पर केंद्रित थी, लेकिन 2021-22 में इसे बढ़ाकर 22 जल्दी सड़ने वाली फसलों को शामिल किया गया।
- इसका मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसानों को उपभोक्ता कीमतों का उचित हिस्सा मिले।

साल भर सस्ती कीमतों को बनाए रखना:

- ऑपरेशन ग्रीन्स की शुरुआत टमाटर, प्याज, और आलू (TOP) पर केंद्रित थी, जिसका उद्देश्य कीमतों में अत्यधिक उतार-चढ़ाव को कम करना और भंडारण ढांचे की स्थापना करना था।
- 2021-22 में, इस योजना को 22 जल्दी सड़ने वाली फसलों तक विस्तारित किया गया।

योजना के तहत दिए जाने वाले सब्सिडी:

- योजना के दिशानिर्देशों के अनुसार, निम्नलिखित दो घटकों पर 50% सब्सिडी प्रदान की जाती है:
    1. परिवहन (Transportation)
    2. TOP फसलों के लिए उचित भंडारण सुविधाओं का किराया (Hiring of appropriate storage facilities for TOP Crops)

किसानों द्वारा सामना की जा रही समस्याएं:

1. **प्याज के किसानों की समस्या (Maharashtra):**
    - महाराष्ट्र में प्याज के किसानों को कीमतों में 50% की गिरावट का सामना करना पड़ रहा है, जो केवल 15 दिनों में हो गई है, इसके कारण ज्यादा आपूर्ति और घटती मांग है।
    - किसानों ने 20% निर्यात शुल्क हटाने की मांग की है ताकि निर्यात बढ़े और उनके लाभ में सुधार हो सके।
2. **निर्यात प्रतिबंध और शुल्क:**
    - दिसंबर 2023 में, सरकार ने घरेलू कीमतों को नियंत्रित करने के लिए प्याज के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया था।
    - मई 2024 में प्रतिबंध हटा लिया गया, लेकिन न्यूनतम निर्यात मूल्य और निर्यात शुल्क लागू किया गया, जिससे किसानों के लाभ पर और असर पड़ा।
3. **आलू की कमी (Odisha और Jharkhand):**
    - ओडिशा और झारखंड जैसे राज्यों में आलू की कमी का सामना हो रहा है, जो पश्चिम बंगाल से आपूर्ति पर प्रतिबंधों के कारण और बढ़ गई है।
4. **पश्चिम बंगाल में आलू उत्पादन में गिरावट:**
    - पश्चिम बंगाल में असमय बारिश और काले ठंडे मौसम के कारण आलू उत्पादन में गिरावट आई है, जिससे आलू की कमी हो गई है।

योजना की प्रभावशीलता पर निष्कर्ष:

- कीमतों में अस्थिरता और आपूर्ति की कमी जैसी समस्याएं ऑपरेशन ग्रीन्स योजना के सामने आ रही कठिनाइयों को दर्शाती हैं।
- किसानों के लिए उचित कीमतों और उपभोक्ताओं के लिए सस्ती दरों के बीच संतुलन बनाए रखना एक निरंतर चुनौती बनी हुई है।
- इन समस्याओं को हल करने के लिए अधिक प्रभावी उपायों और रणनीतियों की आवश्यकता है ताकि योजना का उद्देश्य सही तरीके से पूरा किया जा सके।

घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण / Household Consumption Expenditure Survey: 2023-24

हाल ही में, 2023-24 के लिए घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण को 2011-12 के बाद 11 सालों के अंतराल के बाद दूसरी बार आयोजित किया गया। 2017-18 के सर्वेक्षण डेटा को "गुणवत्ता" संबंधी चिंताओं के कारण रद्द कर दिया गया था।

सर्वेक्षण के मुख्य निष्कर्ष:

1. **औसत मासिक प्रति व्यक्ति व्यय (MPCE):** 2023-24 के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में यह ₹4,122 और शहरी क्षेत्रों में ₹6,996 अनुमानित है।
2. **शहरी-ग्रामीण अंतर में कमी:** 2022-23 के 71% से घटकर 2023-24 में यह 70% हो गया, जो यह पुष्टि करता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोग वृद्धि की गति बनी हुई है।
3. **वर्गों में असमानता:** भारत की ग्रामीण आबादी के सबसे निचले 5% का औसत MPCE ₹1,677 है, जबकि शीर्ष 5% का ₹10,137 है।
4. **राज्यों में असमानता:** MPCE में सबसे अधिक Sikkim में और सबसे कम Chhattisgarh में है।
5. **उपभोग व्यवहार:** दोनों ग्रामीण (53%) और शहरी (60%) क्षेत्रों में खाद्य से संबंधित चीजों के अलावा अन्य वस्तुओं पर अधिक खर्च देखा गया, जिसमें प्रमुख योगदान परिवहन, कपड़े आदि का है।
6. **किराया का खर्च:** शहरी क्षेत्रों में गैर-खाद्य खर्च का 7% किराए पर खर्च होता है।
7. खाद्य वस्तुओं में योगदान: खाद्य वस्तुओं में पेय पदार्थ और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ प्रमुख योगदानकर्ता हैं।
8. **उपभोग असमानता में गिरावट:** Gini गुणांक में पिछले वर्ष की तुलना में ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में गिरावट आई है।
    - Gini Coefficient आय असमानता को मापने का एक तरीका है, जो 0 (पूर्ण समानता) से लेकर 1 (पूर्ण असमानता) तक होता है।

गृहस्थ उपभोग व्यय सर्वेक्षण (HCES):

उद्देश्य: HCES का उद्देश्य परिवारों द्वारा वस्त्र और सेवाओं पर होने वाले उपभोग और व्यय की जानकारी एकत्र करना है।

संचालनकर्ता: यह सर्वेक्षण राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (NSSO) द्वारा, जो सांख्यिकी और कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय के अधीन आता है, संचालित किया जाता है।

सर्वेक्षण का उपयोगिता: यह सर्वेक्षण निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए महत्वपूर्ण डेटा प्रदान करता है:

1. **आर्थिक भलाई के रुझानों का आकलन**: यह गरीबी, असमानता और सामाजिक बहिष्करण को मापने में मदद करता है।
2. **उपभोक्ता वस्त्र और सेवाओं की टोकरी और वजन**: उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) की गणना के लिए उपभोक्ता वस्त्रों और सेवाओं की टोकरी और उनके वजन को निर्धारित और अद्यतन करना।
3. **महत्वपूर्ण संकेतक**: मासिक प्रति व्यक्ति उपभोग व्यय (MPCE) HCES से संकलित किया जाता है, जो अधिकांश विश्लेषणात्मक उद्देश्यों के लिए मुख्य संकेतक के रूप में उपयोग होता है।

नमूना आकार: 2023-24 के MPCE के अनुमान 2.61 लाख से अधिक शहरी और ग्रामीण परिवारों से एकत्र किए गए डेटा पर आधारित हैं, जो देश के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में फैले हुए हैं।

रुझानों का मूल्यांकन:

1. **भारतीय घरेलू उपभोग खर्च में वृद्धि**
    - अगस्त 2023 से जुलाई 2024 तक भारत के औसत घरेलू उपभोग खर्च में वास्तविक रूप से 3.5% की वृद्धि हुई।
    - यह उपभोग असमानता में कमी और शहरी और ग्रामीण खर्चों के बीच अंतर में संकुचन का संकेत देता है।
2. **गिनी गुणांक में गिरावट**
    - गिनी गुणांक में गिरावट, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोग असमानता में कमी को दर्शाती है।
    - PM-KISAN और PM गरीब कल्याण अन्न योजना जैसे सामाजिक कल्याण योजनाओं ने उपभोग असमानता को कम करने में योगदान दिया है।
3. **सामाजिक कल्याण योजनाओं का प्रभाव**
    - सामाजिक कल्याण योजनाओं से मुफ्त वस्त्रों ने कुल खर्च में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिससे शहरी और ग्रामीण MPCE में वृद्धि हुई।
4. **भोजन के अलावा वस्तुओं का बढ़ता प्रभाव**
    - घरेलू औसत मासिक खर्च में गैर-खाद्य वस्त्रों का वर्चस्व, भारत की उपभोक्ता-प्रेरित अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने को दर्शाता है।
        - ग्रामीण क्षेत्रों में यह जीवन स्तर में वृद्धि और सेवाओं तक पहुँच का संकेत है।
        - शहरी क्षेत्रों में यह जीवनशैली महंगाई का संकेत हो सकता है।

मत्स्य पालन विस्तार क्षेत्र / Fisheries Extension Sector

भारत में 2013-14 से अब तक मछली उत्पादन में 83% की वृद्धि हुई है, जिससे तीन करोड़ मछुआरों और किसानों को आजीविका के अवसर प्राप्त हुए हैं।

मुख्य बिंदु:

1. **भारत की मछली उत्पादन स्थिति:**
    - भारत, जो विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मछली और मत्स्य पालन उत्पादक है, ने 2013-14 के बाद से मछली उत्पादन में 83% की वृद्धि देखी है।
    - 2022-23 में भारत का मछली उत्पादन 175 लाख टन तक पहुंच गया, जो एक ऐतिहासिक रिकॉर्ड है।
2. **मत्स्य संसाधन और रोजगार:**
    - भारत के मत्स्य संसाधन विविध हैं और लगभग तीन करोड़ मछुआरों और किसानों के लिए आजीविका का अवसर प्रदान करते हैं।
3. **आंतरिक मछली पालन का योगदान:**
    - भारत की मछली उत्पादन में 75% योगदान आंतरिक मछली पालन (इंडलैंड फिशरीज) से होता है।
4. **विस्तार सेवाओं की आवश्यकता:**
    - अंतिम छोर तक पहुंचने वाली मछली पालन और मत्स्य पालन विस्तार सेवाओं को सुधारने की आवश्यकता है।
    - विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसी सेवाओं में मछुआरों/मछली किसानों को प्रजातियों के जीवन चक्र, पानी की गुणवत्ता, रोगों और उपलब्ध पालन प्रौद्योगिकियों पर आधारित सेवाएं दी जानी चाहिए।

भारत में मत्स्य पालन विस्तार सेवाओं का महत्व:

1. **वैज्ञानिक प्रगति और मछली किसानों के बीच सेतु का काम:** मत्स्य पालन विस्तार सेवाएं वैज्ञानिक उन्नतियों और मछली किसानों के दैनिक कार्यों के बीच अंतर को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
2. **महत्वपूर्ण ज्ञान का प्रसार:** इन सेवाओं के माध्यम से मछली प्रजातियों के प्रबंधन, पानी की गुणवत्ता, रोग नियंत्रण और पालन तकनीकों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की जाती है।
3. **सतत प्रथाओं में प्रशिक्षण:** मछुआरों को सतत और पर्यावरण अनुकूल प्रथाओं में प्रशिक्षित किया जाता है, जिससे मछली पालन को एक लाभकारी व्यवसाय मॉडल के रूप में बढ़ावा मिलता है।
4. **जलवायु परिवर्तन और अतिपालन जैसे मुद्दों का समाधान:** जलवायु परिवर्तन और अतिपालन जैसे समस्याओं को देखते हुए यह सेवाएं और भी महत्वपूर्ण हो जाती हैं, क्योंकि यह मछली पालन को अधिक प्रभावी और टिकाऊ बनाने में मदद करती हैं।

भारत में मत्स्यपालन क्षेत्र की चुनौतियाँ:

1. **अधिक मछली पकड़ना (Overfishing):** अत्यधिक मछली पकड़ने से मछलियों की प्रजातियाँ संकट में हैं।
2. **गैरकानूनी मछली पकड़ना (IUU):** बिना अनुमति के मछली पकड़ने से मछली स्टॉक्स का संरक्षण प्रभावित होता है।
3. **खराब प्रबंधन:** निगरानी की कमी और मछली स्टॉक्स पर पर्याप्त डेटा की कमी से समस्याएँ बढ़ती हैं।
4. **बुनियादी ढाँचे की कमी:** अपर्याप्त सुविधाएँ और पुरानी तकनीक कार्यक्षमता में बाधा डालती हैं।
5. **प्रदूषण:** औद्योगिक गतिविधियाँ और कृषि रनऑफ से समुद्री आवासों को खतरा है।
6. **जलवायु परिवर्तन:** समुद्र और ताजे पानी के पर्यावरण में बदलाव से मछलियों के प्रवास और प्रजनन में असर पड़ रहा है।
7. **सामाजिक-आर्थिक मुद्दे:** गरीबी और संसाधनों का असमान वितरण मछुआरे समुदायों को कमजोर करता है।

मत्स्यपालन क्षेत्र की वृद्धि के लिए सरकारी पहलकदमी:

1. **राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (NFDB):** 2006 में स्थापित, यह भारत में मत्स्यपालन विकास के लिए योजना और प्रचार का प्रमुख निकाय है।
2. **ब्लू रिवोल्यूशन (Blue Revolution):** 2015 में शुरू, यह स्थायी विकास और मत्स्यपालन क्षेत्र के प्रबंधन को बढ़ावा देने का उद्देश्य है।
3. **सागरमाला कार्यक्रम (Sagarmala Programme):** 2015 में लॉन्च, इसका उद्देश्य तटीय क्षेत्र और समुद्री क्षेत्र की क्षमता बढ़ाना है, जिसमें मछली पकड़ने के बंदरगाह और प्रसंस्करण सुविधाएँ शामिल हैं।
4. **प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY):** 2020 में लॉन्च, इसका उद्देश्य मछली उत्पादन बढ़ाना, एक्वाकल्चर को बढ़ावा देना और बुनियादी ढाँचे में सुधार करना है।
5. **मत्स्य और एक्वाकल्चर इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट फंड (FIDF):** 2018-19 में ₹7522.48 करोड़ के फंड के साथ स्थापित, यह मत्स्यपालन क्षेत्र के बुनियादी ढाँचे की आवश्यकताओं को पूरा करता है।
6. **राष्ट्रीय मत्स्य नीति (National Fisheries Policy):** 2020 में लॉन्च, यह नीति मत्स्यपालन के स्थायी विकास, जिम्मेदार प्रबंधन और मछुआरों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति सुधारने का लक्ष्य रखती है।

पीएम CARES फंड / PM CARES Fund

प्रधानमंत्री नागरिक सहायता और आपातकालीन स्थिति राहत कोष (PM CARES Fund) को वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान 912 करोड़ रुपये का योगदान प्राप्त हुआ।

मुख्य बिंदु:

1. **स्वैच्छिक और विदेशी योगदान:**
   - 2022-23 में फंड को ₹909.64 करोड़ स्वैच्छिक योगदान और ₹2.57 करोड़ विदेशी योगदान प्राप्त हुए।
2. **ब्याज आय और रिफंड:**
   - फंड ने ₹170.38 करोड़ ब्याज आय अर्जित की और ₹225 करोड़ रिफंड प्राप्त किए, जो मुख्य रूप से वेंटिलेटर खरीद से संबंधित थे।
3. **मुख्य खर्च:**
   - फंड के प्रमुख खर्चों में ₹439 करोड़ शामिल थे, जिनमें ₹346 करोड़ **PM CARES for Children** के लिए और ₹91.87 करोड़ **99,986 ऑक्सीजन कंसंट्रेटर्स** के लिए आवंटित किए गए।
4. **समाप्ति शेष राशि:**
   - FY 2022-23 के अंत में फंड की समाप्ति शेष राशि ₹6,284 करोड़ हो गई, जो पिछले वर्ष (2021-22) से 16% अधिक थी।
5. **कुल प्राप्त योगदान:**
   - 2019-20 से 2022-23 तक पीएम CARES फंड को कुल ₹13,605 करोड़ प्राप्त हुए, जिसमें ₹13,067 करोड़ स्वैच्छिक योगदान और ₹538 करोड़ विदेशी योगदान शामिल हैं।

पीएम CARES फंड के बारे में:

- **पंजीकरण**: पीएम CARES फंड को 2020 में **पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट** के रूप में **रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1908** के तहत पंजीकृत किया गया था।
- **स्थापना**: यह कोविड-19 महामारी के कारण उत्पन्न स्थिति से निपटने के लिए स्थापित किया गया था।

उद्देश्य:

- किसी भी प्रकार की आपातकालीन या संकटपूर्ण स्थिति, जैसे कोविड-19 महामारी, से निपटना और प्रभावित लोगों को राहत प्रदान करना।

शासन:

- प्रधानमंत्री **पीएम CARES फंड** के **अध्यक्ष** के रूप में कार्य करते हैं।
- रक्षा मंत्री, गृह मंत्री और वित्त मंत्री फंड के **अध्यक्ष-प्रति** ट्रस्टी होते हैं।
- यह सरकार के बजट का हिस्सा नहीं है, और इसका कार्य सरकार के प्रत्यक्ष वित्तीय नियंत्रण से अलग है।

कर लाभ:

- पीएम CARES फंड में किए गए दान **आयकर अधिनियम, 1961** के तहत **80G** के लाभ के लिए पात्र हैं, जिससे 100% छूट मिलती है।
- दान **कंपनी अधिनियम, 2013** के तहत **कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (CSR)** खर्च के रूप में भी गिने जाएंगे।

H. pylori

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद-जनोमिक्स और इंटीग्रेटिव बायोलॉजी संस्थान (CSIR-IGIB) के शोधकर्ताओं ने एक नया तरीका खोजा है, जिससे CRISPR-आधारित FELUDA डायग्नोस्टिक पद्धति का उपयोग करके H. pylori बैक्टीरिया और इसके क्लैरिथ्रोमाइसिन प्रतिरोध उत्परिवर्तन का पता लगाया जा सकता है।

H. pylori के बारे में जानकारी:

H. pylori एक ग्राम-नकारात्मक, माइक्रोएरोफिलिक बैक्टीरिया है जो मनुष्यों को संक्रमित करता है और आमतौर पर पेट में रहता है।

यह किस बीमारी का कारण बनता है: यह पेट की आंतरिक परत में सूजन और अल्सर उत्पन्न करता है, जिससे पाचन तंत्र से जुड़ी समस्याएं होती हैं। यह क्रॉनिक गैस्ट्राइटिस, पेप्टिक अल्सर, गैस्ट्रिक लिम्फोमा और गैस्ट्रिक कैंसर का प्रमुख कारण है।

1. **संक्रमण के फैलने के तरीके:**
   - **फीकल-ओरल**
   - **गैस्ट्रिक-ओरल**
   - **ओरल-ओरल**
   - **यौन संपर्क** इसके संक्रमण का खतरा निम्न आर्थिक स्थिति वाले लोगों में अधिक होता है।
2. **वैश्विक प्रभाव:** H. pylori दुनिया की 43% से अधिक जनसंख्या को संक्रमित करता है और पाचन तंत्र से जुड़ी बीमारियों जैसे पेप्टिक अल्सर, गैस्ट्राइटिस, डिस्पेप्सिया और यहां तक कि गैस्ट्रिक कैंसर का कारण बनता है।
3. **क्लैरिथ्रोमाइसिन के प्रति प्रतिरोध:** H. pylori में 23S राइबोसोमल RNA जीन में उत्परिवर्तन के कारण क्लैरिथ्रोमाइसिन के प्रति प्रतिरोध बढ़ रहा है, जिससे इलाज में कठिनाइयां आ रही हैं।
4. **नवीन डायग्नोस्टिक टूल्स की आवश्यकता:** H. pylori और इसके एंटीबायोटिक प्रतिरोध का पता लगाने के लिए सस्ते, तेज़ और प्रभावी डायग्नोस्टिक टूल्स की आवश्यकता है, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहां स्वास्थ्य सेवाएं कम हैं।
5. **CRISPR-आधारित डायग्नोस्टिक्स:** CRISPR तकनीकें विशेष उत्परिवर्तनों का पता लगाने में उच्च सटीकता प्रदान करती हैं, इसमें गाइड RNAs का उपयोग करके DNA की पहचान की जाती है।
6. **पूर्व के शोध और सीमाएं:** पहले CRISPR-Cas9 पद्धतियों का उपयोग किया गया था, लेकिन विशिष्ट PAM सीक्वेंस की आवश्यकता के कारण सीमाएं थीं।
7. **नवीनतम विकास:**
   - अध्ययन में **en31-FnCas9**, एक इंजीनियर प्रोटीन, जिसे **Francisella novicida** से लिया गया है, का उपयोग किया गया।
   - यह PAM सीक्वेंस की सीमा को पार करता है और H. pylori में क्लैरिथ्रोमाइसिन प्रतिरोध से संबंधित उत्परिवर्तन का सफलतापूर्वक पता लगाता है।
8. **नतीजे और उपयोगिता:**
   - इस अध्ययन ने यह दिखाया कि en31-FnCas9 का उपयोग पेट के बायोप्सी नमूनों में H. pylori और इसके प्रतिरोध उत्परिवर्तनों का पता लगाने में प्रभावी है।
   - इसे एक **लैटरल फ्लो आधारित टेस्ट स्ट्रिप (FELUDA)** के साथ जोड़ा गया, जिससे त्वरित और दृश्य परिणाम प्राप्त होते हैं, जो दूरदराज के चिकित्सा सेटिंग्स के लिए आदर्श है।

लाभ:

1. **सीक्वेंसिंग-रहित:**
   यह उन्नत आनुवंशिक सीक्वेंसिंग उपकरणों की आवश्यकता नहीं होती है।
2. **लागत-प्रभावी:**
   यह सस्ते और संसाधन-गरीब क्षेत्रों में उपलब्ध है, जिससे इसे अधिक लोगों तक पहुंचाना संभव है।
3. **त्वरित परिणाम:**
   यह चिकित्सकों के लिए तेज़ और सटीक निदान प्रदान करता है, जिससे उपचार में तेजी आती है।
4. **लक्षित उपचार:**
   यह व्यक्तिगत उपचार रणनीतियों को सक्षम बनाता है, जिससे एंटीबायोटिक प्रतिरोध के जोखिम को कम किया जा सकता है।

"GET READY FOR A WILD RIDE OF KNOWLEDGE !"

SUBSCRIBE OUR NEW YOUTUBE CHANNEL

ANKIT AVASTHI

Video will be upload soon !

RRB NTPC
TEST SERIES
100+ Mock Test
78 Sectional Test
40+ years PYPs
60+ Current affairs
TEST
Only
99
Per Year
Buy Now

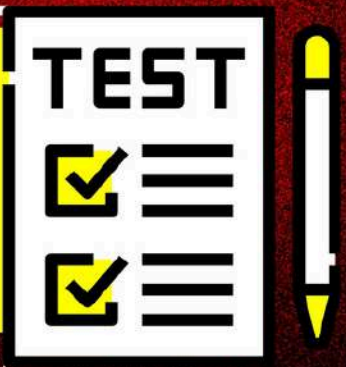

GA FOUNDATION

Hand Written Notes

Apni Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

Ankit Inspires India

₹ Only 1999

4 पुस्तकों का सम्पूर्ण सेट

अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

7878158882

APNI PATHSHALA

UPPSC,RO/ARO,BPSC,UP TEST SERIES

UPPSC
(TEST SERIES)
- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

RO/ARO
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

BPSC
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299 YEAR

SSC (TEST SERIES)
- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

RPF (TEST SERIES)
- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

NCERT COMPLETE

FOUNDATION BATCH

FOR ALL

- POLITY
- ECONOMICS
- HISTORY
- GEOGRAPHY

- DAILY LIVE CLASSES
- , WEEKLY TEST
- CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
- LIVE DOUBT SESSIONS
- DAILY PRACTISE PROBLEM

Rs 4999/-

Apni Pathshala 7878158882 Apni.Pathshala kaankit AnkitAvasthiSir Avasthiankit

ONLY
POLITY
1499
RS
DAILY LIVE CLASSES
, WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTISE PROBLEM
Apni Pathshala
7878158882
Apni.Pathshala
kaankit
AnkitAvasthiSir
Avasthiankit

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,

Stenographer (Grades C & D)

Only at

99/-Year

Enroll Now !